सम्पादकीय

तिब्बत और खालसा

तिब्बत के लोग अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहे हैं। पिछले एक मास से तिब्बत में चीन के खिलाफ विद्रोह चल रहा है। वहां के तीनों प्रान्तों उत्सांग, अमदो और खम में लोग हजारों की संख्या में चीन के खिलाफ सड़कों पर निकल आए हैं। चीन साम्यवादी देश है और वहां सरकार से भिड़ने का क्या अर्थ होता है, यह शायद भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में बैठकर अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। चीनी सेना और सशस्त्र पुलिस निहत्थे तिब्बतियों पर गोलियां चला रही है। सैंकड़ों तिब्बतियों की लाशों से वहां के रास्ते पट रहे हैं। घर-घर में घुसकर सेना के लोग तिब्बती नौजवानों को पकड़ रहे हैं और उन्हें टार्चर सेंटर में ले जाया जा रहा है। कुछ वहां मर रहे हैं। कुछ अपंग हो रहे हैं और कुछ शायद अब सारी उम्र चीन की जेलों में ही सड़ते रहेंगे। लेकिन आजादी के लिए यह बलिदान देना ही पड़ता है। इसलिए इस पर शोक मनाने की बजाय तिब्बतियों के साहस की सराहना करनी होगी।

तिब्बत के समर्थन में पिछले दिनों दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर भारतीयों ने एक विशाल प्रदर्शन किया था। हजारों की संख्या में तिब्बत के साथ एकजुटता प्रदर्शित करते हुए भारतीय जुटे थे। प्रदर्शन में राष्ट्रीय सिख संगत के लोग भी बड़ी संख्या में शामिल हुए। विदेशी मीडिया सिखों को इतनी बड़ी संख्या में तिब्बत के समर्थन में प्रदर्शन करते हुए देखकर थोड़ा हैरान हो रहा था। कमोवेश यही स्थिति भारतीय मीडिया की भी थी।

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने जिस खालसा की सृजना की थी, वह खालसा धर्म की रक्षा के लिए संकल्पित था। जहां भी अन्याय होगा, अनाचार होगा, निर्बल को दबाया जाएगा, शस्त्र बल पर शास्त्र को चुप कराया जाएगा, वहां खालसा निर्बल के साथ खड़ा होगा। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने केवल उसे निर्बल के साथ खड़ा ही नहीं किया बल्कि चिड़ियों में बाज से लड़ने की ताकत पैदा करने का मंत्र भी दिया।

दान दिजै जग मात ! इहै, जिम खालसा पन्थ करौ सुख पाए।
नास मलेछ करे सब को, हरि नाम सुने, गुरु ध्यान लगाए।
चिड़ीआ सम सिख बिराजत हैं, तदपं सब खान पठानन धाए।।

-गुरु बिलास पातशाही दस 8/46

इतिहास गवाह है कि तिब्बत के लोग निर्बल नहीं है उन्होंने चीन को कई बार युद्ध में परास्त किया हुआ है। वे अपनी शक्ति को भूल गए हैं। तिब्बत की शक्ति उसके अहिंसा के रास्ते की ही शक्ति है। तिब्बत के लोग निहत्थे चीनी सेना की गोलियों के शिकार हो रहे हैं। इसीलिए चीन को दुनिया भर में मुंह छिपाना मुश्किल होता जा रहा हैं। तिब्बत की अहिंसा के सामने ही चीन का राक्षसी चेहरा उजागर हो रहा है। गुरुवाणी में कहा गया है-

''जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ।।
सिरु धरि तली गली मेरी आउ।। पृ.१४१२

तिब्बत के लोगों ने मानों गुरुवाणी के इस तत्व को आत्मसात कर लिया है। वे अपने देश की स्वतंत्रता के लिए हथेली पर सिर रखकर चीन का मुकाबला कर रहे हैं। वे यमराज के कंधों पर बैठकर दलाईलामा के नाम का जाप कर रहे हैं। जो लोग यमराज की सवारी करने का साहस जुटा लेते हैं उनको कौन पराधीन रख सकता हैं? और यहां ऐसे मरजीवड़ों का खेल चल रहा हो वहां खालसा हाजिर नहीं होगा तो ओर कौन हाजिर होगा? तिब्बत के समर्थन में खालसा आगे आया है, यह आश्चर्य का विषय नहीं है आश्चर्य तब होता यदि खालसा तिब्बतियों के आत्म बलिदान के ऐसे पर्व पर उपस्थित न होता। श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के पृ. 1368 पर कबीर साहिब जी की बाणी-

कबीर ऐसी होयि परी, मन को भावतु कीनु।।
मरनै ते किआ डरपना, जब हाथि सिधउरा लीन।।

- डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री